OM-3 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 10/04/2021 2:26 PM Page 5

फरिश्ते के रूहानी रिश्ते इस जहां में

ब्र.कु. आशा दीदी, निदेशिका, ओ.आर.सी.

मैं खुद को बहुत भाग्यशाली मानती हूँ। जो बाबा की अति लाडली आदरणीय दादी जानकी जिनको बाबा ने बनाया, विश्व के आगे रखा, ऐसी दादी की पालना उपलब्ध हुई। एक बार की बात है किसी आत्मा जिसके साथ बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध था और मेरा फेथ भी था। उसने एक बार झूठ बोला तो मेरा फेथ टूट गया। मुझे लगा कि इस आत्मा ने अगर आज झूठ बोला है तो हो सकता है कि पहले भी बोला हो! मैं लंदन में गई हुई थी तो दादी जी से मैंने ये सवाल किया कि दादी जी मेरा बिल्कुल दिल नहीं करता कि अब मैं उस आत्मा के साथ सेवा में रहूँ, लेकिन दादी जी ने कहा आशा तुमने ये फेथ उस आत्मा पर बनाने के लिए कितना वर्ष लिया? तो मैंने कहा दादी बहुत वर्ष। तो दादी बोली बहुत वर्षों के

वे इकोनॉमी का अवतार थीं

ब्र.कु. निर्मला दीदी, निदेशिका, ऑस्ट्रेलिया

दादी जानकी से हमारा 1974 से कंटीन्यू रिश्ता रहा ही। दादी इकॉनोमी का अवतार थीं। वो हमेशा कहती थीं कि मैं पर्स हाथ में नहीं उठाती। मेरे कपड़े सफेद हैं और जेब खाली है और उसने 5 पाउंड की कुर्सी जो लंदन में खरीदी थी, सालों तक रिपेयर करके वही चलाती रहीं। एकनामी एक बाप का नाम उनके शब्दों में आता रहा और दादी की 90 की उम्र तक तो मेमोरी शार्प थी, तो जिन विदेशियों को शुरू से जानती थीं और उनके संस्कारों को जानती थीं, तो उसी अनुसार राय देती थीं। परन्तु कई बार उनसे ही पूछती थीं कि तुम क्या चाहती हो, तुम क्या समझती हो कि क्या करना चाहिए। और फिर उसी अनुसार राय देती थीं। और दादी का जो समर्पण भाव है वो भी, उसका संग भी लंदन में, यूके में विदेशियों को लगा। कई यूरोपियन भाई-बहनों ने अपना सबकुछ ईश्वरीय सेवा में लगा दिया और दादी से सिर्फ एक कमरा लिया। और दादी का जो मुरली के लिए प्यार था क्योंकि शुरू में जो उन्होंने पूछा था कि बाबा मैं मुरलीधर कैसे बनूँ, तो बाबा ने कहा था कि 18 बार मुरली पढ़ना। तो दादी हमेशा यज्ञ में तो 18 बार मुरली पढ़ती थीं। और अंत तक सेवा भी करती रहीं, मुरली भी पढ़ती रहीं और अमृतवेला भी करती रहीं। दादी को सेवा का बहुत उमंग उत्साह था। सेवा के लिए कभी भी तैयार हो जाती थीं।

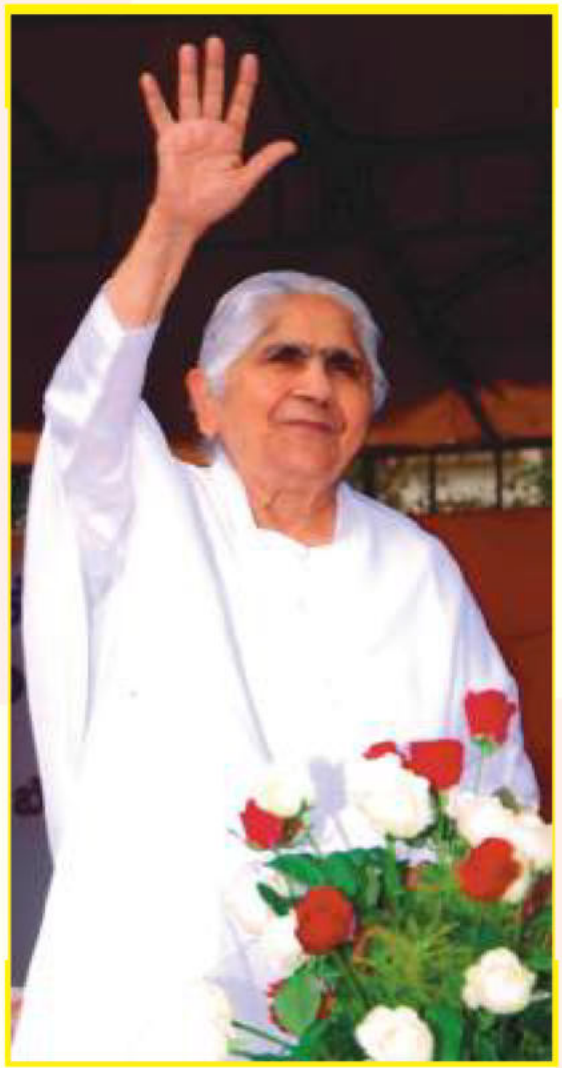

शुभ भावना और शुभ कामना रखना सिखाया

फेथ को एक घटना से तुम तोड़ देती हो! मैंने कहा दादी फिर मेरा फेथ तो नहीं रहेगा। दादी ने कहा कि ये भी गलत है, क्योंकि तुम्हारे वायब्रेशन उसको जायेंगे। तुम शुभ भावना, शुभ कामना रखो, जिससे उसको शक्ति मिले और वो अपने उस ओरिज़नल स्वरूप में आ जाये। मैंने देखा सम्बन्धों को हम आसानी से तोड़ देते हैं। जिन सम्बन्धों को पाला होता है वो सम्बन्ध कठिनाई से बनते हैं। तोड़ना सहज है, लेकिन बनाना कठिन है। दादी की ये शिक्षा सदा ही याद रहती है। साथ ही साथ दादी जी का जो हॉस्पिटैलिटी का संस्कार था, केयरिंग नेचर थी दादी की। 1985 में दादी ने मुझे यूरोप टूर पर भेजा। जाते समय दादी जी ने जो आत्मा भण्डारे के निमित्त थीं उन्हें कहा कि इसको बहुत सारी टोलियां दे दो। ये मांगेगी नहीं और इसको वहाँ कुछ मिलेगा भी नहीं। तो बहन ने जो टोलियां दी थी वो मैं ओरों को भी खिलाती थी कि दादी जी ने भेजी है। लेकिन जब मैं जर्मनी पहुंची तो दादी जी को वहाँ आना था। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि दादी लंदन से भोजन लेकर आयीं कि इसको इतने दिन हो गए जो अच्छे से खाना नहीं खाया होगा। ऐसे दादी रूहानी और जिस्मानी दोनों रूप से हमें स्नेह और पालना देती रहीं। ऐसी दादी हमारी बुद्धि में और हमारे दिलों में जिंदा हैं। और दादीजी की वो बातें मन और बुद्धि में झंकृत होती रहती हैं।

दादी ने मुझे रशियन में ट्रान्सलेट करने को कहा

ब्र.कु. सुधा दीदी, निदेशिका,मॉस्को

दादी जानकी जी की परख शक्ति, निर्णय शक्ति और दृढ़ता की शक्ति बहुत कमाल की थी। मुझे याद आता है सन् 1994 जब दादी तीसरी बार रशिया में आई थीं और वो क्लास का समय था। क्लास तीन भाषाओं में चल रही थी। हिन्दी, इंग्लिश और रशियन। मुझे रशियन नहीं आती थी, कुछ ही शब्द आते थे। और क्लास में किसी को हिन्दी नहीं आती थी। इसीलिए मैं दादी को इंग्लिश से हिन्दी में और रशियन बहन इंग्लिश से रशियन में ट्रांसलेट कर रही थी। लेकिन बीच-बीच में उस रशियन बहन को मैं कुछ-कुछ शब्द रशियन में बता देती थी। आप ऐसा ट्रांसलेट करो, आप ऐसा करो। दादी ने इस बात को नोट किया और कुछ देर के बाद ही दादी ने मुझे कहा कि आप खुद ही रशियन में ट्रांसलेट क्यों नहीं करती हो! मैंने दादी को कहा कि दादी मुझे रशियन नहीं आती, बहुत कहने के बाद भी दादी ने कहा कि नहीं आपको आती है, तभी आप उस बहन को बीच-बीच में रशियन के शब्द बताती रही हो। तो अब आपको ही रशियन में ट्रांसलेट करना है। दादी की इस दृढ़ता के आगे मैं कुछ नहीं कर सकती थी, तो दादी की बात को मानना ही पड़ा। फिर आगे पूरी क्लास को मैंने ही रशियन में ट्रांसलेट किया। कुछ शब्दों में, कुछ हाथों के इशारों से, कुछ चेहरे के एक्सप्रेशन से, कुछ आंखों के इशारों से यानी किसी न किसी तरह से किया। और केवल उस दिन ही नहीं, जब तक दादी मॉस्को में थीं दादी को रशियन में ही ट्रांसलेट करती थी। लेकिन सबसे खूबसूरत बात जो मैं आप सबको बताना चाहती हूँ वो ये है कि दादी का मुझसे रश्यिन में उस वक्त ट्रांसलेट कराना जैसे मेरे लिए एक वरदान बन गया। उसके बाद हर वर्ष जब भी कोई दादी रशिया में आती थीं तो मैं दादी को डायरेक्ट हिन्दी से रशियन में ट्रांसलेट कर पाती थी। जबकि मैंने रशियन कभी सीखी नहीं थी और अभी तक भी नहीं सीखी। इसको मैं एक बड़ा सौभाग्य समझती हूँ कि जब आप ऐसी महान विभूतियों के साथ, ऐसी अनुभवी आत्माओं के साथ बैठकर उनके शब्दों को समझें, उनके भावों को कैच कर पायें, उनके नैनों की भाषा को समझ पायें और उसको दूसरों तक पहुंचा पायें, इसमें कितनी बड़ी सेवा है। दादी जी इसके लिए तो बहुत ही पर्टिकूलर थीं। मैं हर बार ये नोट करती थी दादी जब भी आती थीं जैसे ज्ञान सरोवर में क्लास कराने आती थीं तो वो ज़रूर ट्रांसलेशन बूथ की ओर देखकर पूछती थीं कि कौन ट्रांसलेट कर रहा है? क्योंकि उनको इस बात का कन्सर्न रहता था कि व्यक्ति केवल शब्दों को ही न ट्रांसलेट करे बल्कि भावों को, उनकी गहराई को ट्रांसलेट करे और वो श्रोतागणों तक पहुंचा पाये। तो दादी ऐसा परख पाती थी, ऐसी उनकी निर्णय शक्ति थी जिससे वे हर आत्मा को बहुत आगे बढ़ा देती थीं।

सौ वर्ष की उम्र में भी दादी का ब्रेन सम्पूर्ण स्वस्थ और सक्रिय

राजयोगा टीचर ब्र.कु. संतोष,रशिया

मुझे याद आता है कि रशिया में भी दादी जानकी जी कई बार आईं और छोटी सभा से लेकर 5000 तक की सभा में भी उन्होंने अपना वक्तव्य रखा और योग सिखाया। ऐसे ही एक बड़ी सभा में वहाँ के फेमस सेंट पीटर्सबर्ग के फेमस स्टेडियम में उनका प्रोग्राम रखा गया था तो ये सूचना सुनकर इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ मेडिकल यूनियन और बायोकेमिस्ट्री के जो प्रेजिडेंट थे उस समय, अभी भी हैं मिस्टर कोरोतकॉव और एट द सेम टाइम इंटरनेशनल प्रेजिडेंट रहे हैं। और यूनियन ऑफ किरिलोनिक्स टेक्नोलॉजिस। तो वे अपने इंस्ट्रूमेंट के साथ हॉल में पीछे आकर बैठ गये। देखना चाहते थे कि 90 वर्ष का ऐसा कौन-सा योगी रशिया में आया है, क्योंकि वो रिसर्च कर रहे थे 60 साल से ऊपर वाले लोगों की ब्रेन की स्टेबिलिटी या उसके ऊपर। इतने 5000 की सभा में भाषण करने के बाद उन्होंने सोचा कि इनके ब्रेन पर कुछ तो शांति की कमी होगी, ऐसा सोच कर वो आये। कहने लगे कि क्या मैं आपकी एनर्जी को मेजर कर सकता हूँ? तो दादी ने कहा क्यों नहीं भाई, मैं तो आपकी सेवा के लिए हूँ। तो वो जब दादी जी को वहाँ ले गये और उन्होंने अपने इंस्ट्रूमेंट्स दादी जी के ऊपर लगाये। पांच मिनट के अन्दर उसने जो अपना रिज़ल्ट देखा तो कहते हैं कि वो फर्स्ट पर्सन अपनी लाइफ में ऐसा देख रहा है जो इस उम्र में 100 के नज़दीक आ गया है कि लेकिन ब्रेन के ऊपर एक भी अनब्रोकन शाइनिंग लाइट, क्राउन लाइट का औरा ये इतना फेसिनेशन(आसक्ति) उनको हुआ। तो उन्होंने एप्रीसिएशन डिप्लोमा भी दिया। और इसके साथ-साथ अपनी संस्था की तरफ से दादी को ऑनर भी दिया। तो ऐसे सुन्दर-सुन्दर बातें याद करके हम हमेशा दादी जी को एग्ज़ाम्पल अपने सामने रखते हैं।

योगगुरू स्वामी रामदेव जी से आध्यात्मिक चर्चा करते हुए दादी जानकी जी।

दादी जानकी जी का अभिवादन करते हुए श्री श्री रविशंकर जी।

प्लैटिनम जुबली-2011 के संत सम्मेलन में संतों के साथ दादी जानकी जी।